28 गृह क्रियाएँ, स्थान व्यवस्था एवं सज्जा
(Household Activities, Space Management & Decoration)

आवास मानव समूह के लिये एक शरण स्थल है जहाँ उसके सर्वांगीण विकास के लिये उपयुक्त संरक्षण एवं सुविधाएँ मिलती हैं। वास्तव में जिस स्थान पर पारिवारिक जीवन का वातावरण पाया जाता है उसे ही घर कहते हैं। अतः घर वह स्थान है जहाँ परिवार रहता है तथा पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाता है। घर में रहकर ही व्यक्ति सुरक्षित महसूस करता है तथा अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन, वस्त्र एवं संरक्षण (धूप, गर्मी, वर्षा आदि) की पूर्ति करता है।

परिवार के सदस्यों का जीवन सुखमय बनाने में मकान एक महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है। मकान ऐसा होना चाहिये जिसमें परिवार के विभिन्न सदस्य अपनी दैनिक क्रियाएँ सुचारु रूप से कर सकें साथ ही उन्हें आराम, मनोरंजन एवं अध्ययन की पूर्ति हेतु भी उचित स्थान प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सदस्य अपने मानवीय गुणों का विकास कर सके तथा अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सके। अर्थात् एक मकान से हमारा तात्पर्य केवल छत व चारदीवारों से नहीं हैं जो मनुष्य की गर्मी, सर्दी व वर्षा आदि से रक्षा करे अथवा रात्रि के विश्राम के लिये सुरक्षित स्थान प्रदान करे अपितु उस घर से है जो कि सुखदायक व शान्तिमय हो, मानव जीवन की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करे, प्रकृति के विभिन्न तत्व जैसे हवा, प्रकाश धूप आदि का सर्वाधिक लाभ मिले, उसकी योजना व्यक्ति की प्रकृति, इच्छाओं एवं आदतों के अनुसार हो तथा रखरखाव एवं सफाई आसान हो। ऐसा मकान उत्तम मकान कहलायेगा तथा इसमें रहकर व्यक्ति को अधिकतम सुख एवं सन्तोष प्राप्त होगा। एक उत्तम आवास हेतु हमें निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिये :

1. मकान स्वास्थ्य के नियमों के अनुकूल हो।
2. मकान परिवार के दैनिक जीवन की विभिन्न गृह क्रियाओं के लिये पर्याप्त स्थान एवं सुविधाएँ प्रदान करता हो। दैनिक गृह क्रियाओं एवं उनके लिये उपयुक्त स्थान का विवरण तालिका 28.1 में दिया गया है।

तालिका 28.1 : गृह क्रियाएँ एवं स्थान निर्धारण

क्र.सं.	क्रियाएँ	स्थान निर्धारण
1.	भोजन पकाना	रसोईघर
2.	खाद्य सामग्री का संग्रहण	रसोईघर की ताकें या स्टोर
3.	भोजन करना	भोजन कक्ष, रसोईघर, हॉल, लॉबी
4.	अतिथि की आवभगत	बैठक, बरामदा या हॉल, बगीचा
5.	मनोरंजन – टेलीविजन देखना, रेडियो सुनना आदि	बैठक, हॉल, घर के बीच की लॉबी आगे पीछे के बरामदे, शयन कक्ष

क्र.सं.	क्रियाएँ	स्थान निर्धारण
6.	सोना या आराम करना	शयन कक्ष
	• बच्चों के लिये	बच्चों का कमरा
	• अभिभावक के लिये	अभिभावकों का कमरा
	• अतिथि के लिये	अतिथि कक्ष
7.	अध्ययन	अध्ययन कक्ष,
	• बच्चों के लिये	शयन कक्ष में अध्ययन की जगह, बरामदा
	• बड़ों के लिये	ऑफिस का कमरा, शयन कक्ष में पढ़ने की व्यवस्था, हॉल में अध्ययन की पृथक व्यवस्था
8.	खेलना	बगीचा, बरामदा, आंगन,
	• छोटे बच्चों के लिये	शयन कक्ष, हॉल
	• बड़े बच्चों के लिये	घर की छत, खुला चौक, बगीचा
	• अभिभावक के लिये	बैठक, शयन कक्ष, खेलने का कमरा, हॉल
9.	अन्य संग्रहण (कपड़े, जूते, ऊनी वस्त्र, जेवर)	बॉक्स, कक्ष, अलमारियाँ बखारी (Loft)
10.	वाहन	गेराज, पोर्च
11.	कभी कभी उपयोग में आने वाला सामान बर्तन, फर्नीचर आदि	बखारी, तहखाना
12.	स्नान, शौच, एवं श्रृंगार	स्नानगृह, शौचालय, श्रृंगार कक्ष, शयन कक्ष का एक कोना
13.	सफाई कार्य	
	• बर्तन धोने के लिए	रसोईघर में सिंक या रसोई के पास स्थान
	• कपड़े धोने के लिये	स्नानगृह, उपयोगी स्थान
	• सुखाने के लिये	आंगन, पीछे का बरामदा, बालकनी, छत
	• प्रेस करने के लिये	उपयोगी स्थान, लॉबी, हॉल
14.	पूजा, साधना	पूजा कक्ष, रसोईघर या संग्रहण कक्ष

उपरोक्त दिये गये विवरण के अलावा भी व्यक्ति अपनी सुख सुविधा एवं उपलब्धता का ध्यान रख कर घर में विभिन्न कार्यों के लिये स्थान निर्धारण कर सकता है। एक बड़े घर में जहाँ साधनों की कमी नहीं है वहाँ प्रायः प्रत्येक मुख्य कार्य के लिए अलग–अलग कक्ष होते है जैसे बैठक, भोजन कक्ष, रसोईघर, शयनकक्ष, श्रृंगार कक्ष, पूजा कक्ष, अध्ययन कक्ष इत्यादि (चित्र 28.1)। परन्तु जब जगह की कमी होती है और साधनों का अभाव होता है तब स्थान का समायोजन करना पड़ता है ताकि विभिन्न क्रियाएँ पूरी की जा सकें। यदि स्थान का व्यवस्थापन एवं निर्धारण भली–भांति किया जाये तो एक कमरे के घर में भी सभी गृह क्रियाओं का कर पाना संभव है।

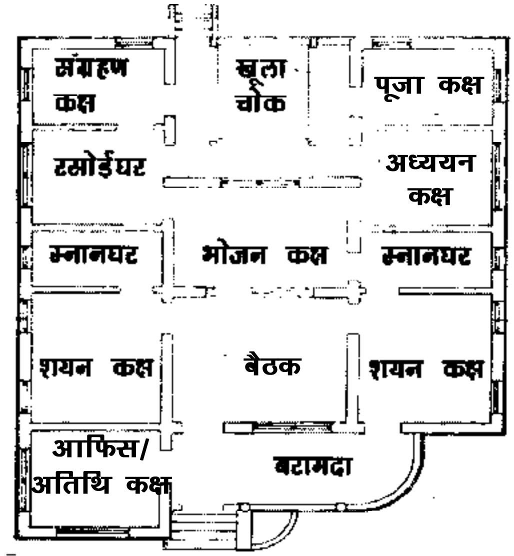

चित्र 28.1 : घर के विभिन्न कक्षों की व्यवस्था

विभिन्न गृह क्रियाओं के लिये स्थान निर्धारण करने के पश्चात् विभिन्न कक्षों का औसतन माप जानना भी आवश्यक है। यदि कमरों का माप या क्षेत्रफल बहुत अधिक है तो भी घर में एक जगह से दूसरे जगह तक जाने में काफी समय खर्च होता है, कमरों में अत्यधिक खालीपन महसूस होता हैतथा साथ ही उसके रख रखाव में परेशानी होती है। इन सबके अलावा घर की लागत भी काफी बढ़ जाती है। अत्यधिक छोटे कमरे भी प्रायोगिक रुप से सही नहीं हैक्योंकि उनमें चलते फिरते टक्कर लगने का डर रहता है तथा सामान भी ढंग से व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है। अतः विभिन्न गतिविधियों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षों के कुछ औसतन माप (Average size) तालिका 28.2 में दिये गये हैं।

तालिका 28.2 : विभिन्न कक्षों का औसतन माप

क्रम सं.	विभिन्न कक्ष	औसतन माप (फुट)
1.	बरामदा	5 x 7
2.	बैठक	12 x 15 to 15 x 20
3.	भोजन कक्ष	10 x 12 to 12 x 15
4.	रसोईघर	10 x 12 to 12 x 15
5.	शयन कक्ष	12 x 14 to 12 x 16
6.	स्नानघर	6 x 7
7.	शौचालय	4 x 5
8.	संग्रहण कक्ष	
	– रसोई के साथ	5 x 7
	– बॉक्स रूम	7 x 9
9.	अध्ययन कक्ष	8 x 10
10.	गैराज	9 x 12

उपरोक्त क्रियाओं को करने के लिये आवास के विभिन्न कक्षों को उनके पारस्परिक सम्बन्धों के अनुसार मुख्यतया तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है।

1. एकान्त क्षेत्र – शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, बाथरुम आदि।
2. अतिथि क्षेत्र – बैठक, भोजन कक्ष, बगीचा, बाहरी बरामदा, आँगन आदि।
3. कार्य क्षेत्र – रसोईघर, भण्डार, चौक, बरामदा आदि।

स्थान व्यवस्थापन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान अवश्य दें :

1. **कमरों का पारस्परिक सम्बन्ध :** कमरों को उनके मुख्य क्षेत्रों के आधार पर व्यवस्थित करें, जैसे भोजन कक्ष रसोईघर के पास होना चाहिये ताकि खाना परोसने में आसानी रहे।
2. **आवागमन** : कमरों में आने जाने का रास्ता खुला रखना चाहिये। बीच में किसी प्रकार की रुकावट न हो।
3. **एकान्त :** एक कमरे से दूसरे कमरे के मध्य एकान्त बनाने के लिए खिड़की दरवाजों की स्थिति पर विशेष ध्यान देना चाहिये। कमरों का दृश्य बाहर नहीं दिखाई देना चाहिये, जैसे दरवाजे कमरे के बीच में न लगाकर एक कोने में रखना।
4. **स्थान का सर्वाधिक उपयोग** : कमरे में जितना भी स्थान है उसका अधिकतम उपयोग ज़रूरी है। एक चौकोर कमरे की अपेक्षा एक आयताकार कमरा अधिक बड़ा लगता है तथा उसमें फर्नीचर आराम से जमाया जा सकता है।
5. **फर्नीचर व्यवस्था :** प्रत्येक कमरे में विभिन्न प्रकार का फर्नीचर काम में लिया जाता है (चित्र 28.2)। योजना बनाते समय बड़े फर्नीचर की जगह निश्चित करके फिर कमरे बनवाने चाहिये। यदि जगह कम हो तो बहुउद्देशीय (Multipurpose) फर्नीचर भी खरीदा जा सकता है।

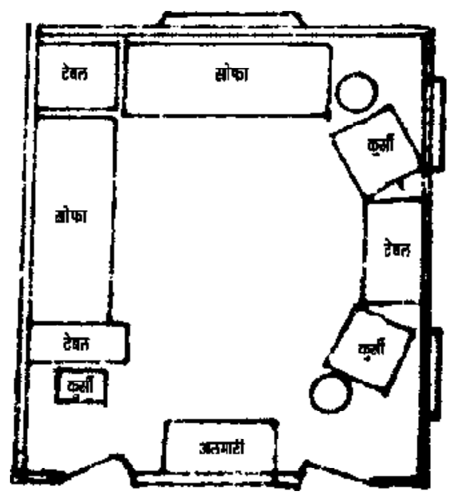

चित्र 28.2 : अतिथि कक्ष की फर्नीचर व्यवस्था

6. जहाँ कहीं भी संभव हो, स्थान का व्यवस्थापन इस प्रकार करना चाहिये कि **कार्यकर्त्ता दो या तीन क्रियाएँ एक साथ कर सके।** जैसे : रसोईघर के पास हॉल हो जिसमें बैठ कर गृहिणी टी.वी. देख सके, खाने का ध्यान रख सके तथा साथ में बच्चों को गृहकार्य करने में भी मदद कर सके।

7. कमरे बन जाने के बाद उसमें फर्नीचर व्यवस्था, रंगों का उपयोग, तथा प्रकाश व्यवस्था, इस प्रकार करें कि कमरे दिखने में बड़े लगें तथा खुलेपन का अहसास हो। जैसे : हल्के रंगों का प्रयोग कमरे को बड़ा दिखाएगा।

गृह सज्जा में रंग एवं सजावटी वस्तुओं का उपयोग

गृह सज्जा, घर को सुन्दर, सुविधापूर्ण एवं आकर्षक बनाने वाली सभी कलाओं, वैज्ञानिक तथ्यों तथा सिद्धान्तों का सम्मिश्रण है। सौन्दर्य एक भावात्मक एवं गुणात्मक पक्ष है जो हमें आनन्द, संतोष एवं परितृप्ति की भावना देता है। सुखमय एवं आनन्दमय जीवनयापन के लिये हम घर की सुव्यवस्था एवं सजावट करते हैं।

सज्जा का दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है गृहिणी अथवा सज्जा करने वाले की आन्तरिक अनुभूतियों को बाहर लाना। कला द्वारा हम अपनी अभिव्यक्तियों को रुप दे सकते हैं। सज्जा करने वाले के व्यक्तित्व की बहुत कुछ जानकारी उसके द्वारा की गई सज्जा से होती है।

कला एवं सुन्दरता एक दूसरे के पूरक हैं। कला के तत्व ही गृह सज्जा में उपयोग में लाये जाते हैं। सज्जा में काम आने वाले कला के तत्वों का ज्ञान होना गृहिणी के लिये आवश्यक है ताकि वह घर की विभिन्न वस्तुओं को आराम देह और सौंदर्यात्मक ढंग से व्यवस्थित कर सके। कला के तत्व निम्न हैं –

1. रेखा (Line)
2. आकार (Shape)
3. बनावट (Texture)
4. रंग (Colour)
5. प्रकाश (Light)
6. स्थान (Space)

रंग

उपरोक्त तत्वों में से रंग एक महत्त्वपूर्ण तत्व है जिसके द्वारा घर को आकर्षक बनाया जा सकता है। घर को सजाने में विशेष रंगों का चुनाव, समय व परिस्थिति, वातावरण, आकार, रुप तथा उसका उपयोग देखकर करना पड़ता है। रंगों का प्रयोग व्यक्तित्व, रुचि और संस्कृति पर निर्भर करता है। रंग का मुख्य स्त्रोत प्रकाश होता है। रंगों को समझने से पहले हमें उसके तीन **आधारभूत गुणों** के बारे में जान लेना आवश्क है।

1. ह्यू (Hue) : रंग के नाम को ही ह्यू कहा जाता है जैसे : लाल, हरा, नीला।
2. मूल्य (Value) : रंग के मूल्य से तात्पर्य रंग में हल्केपन या गहरेपन से होता है जैसे : हल्का पीला और गहरा पीला।
3. तीव्रता (Chroma): रंग की तीव्रता रंग की चमक (Brightness) एवं धुंधलेपन (Dullness) से ज्ञात होती है। जैसे : चमकीला लाल (Blood red), धुंधला लाल (Faded red).

प्रांग वैज्ञानिक द्वारा दिया गया रंग चक्र चित्र 28.3 विभिन्न ह्यूस (रंगों) को दर्शाता है। चक्र के बायें तरफ गर्म रंग तथा दाएं तरफ ठंडे रंग दर्शाये गये हैं। लाल व पीला रंग गर्म हैं क्योंकि ये आग, और सूर्य का रंग है तथा नीला व हरा ठंडे रंग हैं क्योंकि यह रंग पानी और घास का है।

रंगों का वर्गीकरण : रंगों को निम्न तीन भागों में विभाजित किया गया हैः

- प्राथमिक रंग (Primary colours)
- द्वितीयक रंग (Secondary colours)
- तृतीयक रंग (Tertiary colours)
- **प्राथमिक रंग** : ये प्रधान रंग होते हैं। ये प्राकृतिक अवस्था में पाये जाते हैं तथा इन्हें बनाया नहीं जा सकता। लाल, नीला एवं पीला प्राथमिक रंग हैं (चित्र 28.4)।
- **द्वितीयक रंग** : ये रंग किन्हीं दो प्राथमिक रंगों को बराबर अनुपात में मिलाने से प्राप्त होते हैं जैसे : नारंगी, बैंगनी और हरा (चित्र 28.5)।
- **तृतीयक रंग** : ये रंग किसी एक प्राथमिक रंग एवं उसके पास वाले एक द्वितीयक रंग को बराबर अनुपात में मिलाने से प्राप्त होते हैं। जैसे : लाल–नारंगी, लाल–बैंगनी, पीला–नारंगी, पीला–हरा, नीला–हरा, नीला–बैंगनी (चित्र 28.6)।

इन रंगों के अलावा काला, सफेद, स्लेटी व भूरा रंग भी पाया जाता है जिन्हें हम विविध प्रकार से प्रयोग कर घर को आकर्षक बना सकते हैं। इन रंगों को प्रायः उदासीन रंग (Neutral colours) के नाम से जाना जाता है।

रंग योजना : रंग जीवन में अपना प्रभाव कुछ विशेष तौर पर डालते हैं। अतः इनका प्रयोग अत्यन्त सावधानी पूर्वक करना चाहिये। रंग योजना को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

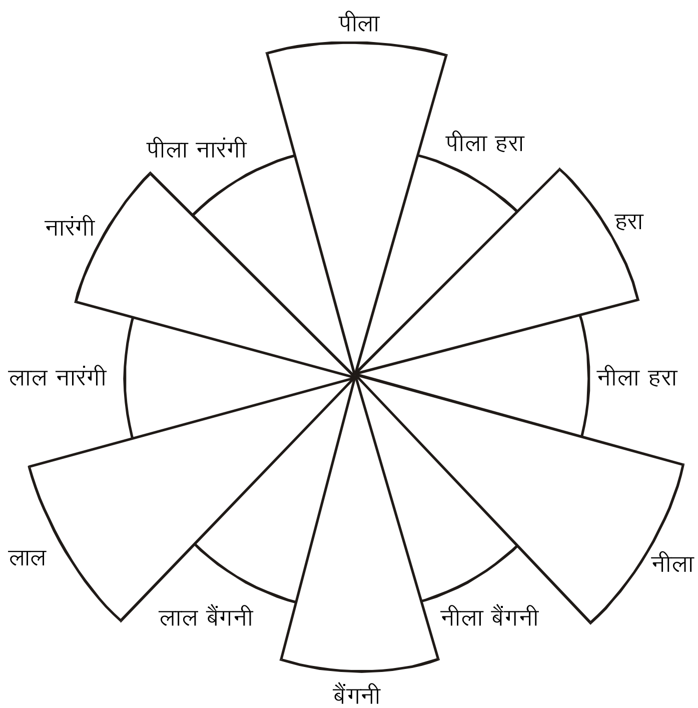

चित्र 28.3 : प्रांग का रंग चक्र

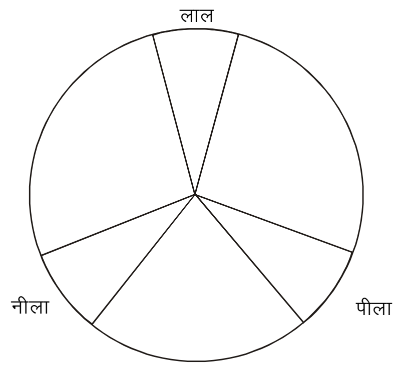

चित्र 28.4 : प्राथमिक रंग

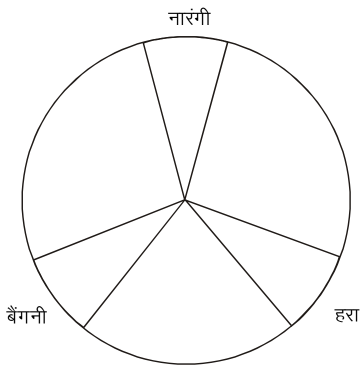

चित्र 28.5 : द्वितीयक रंग

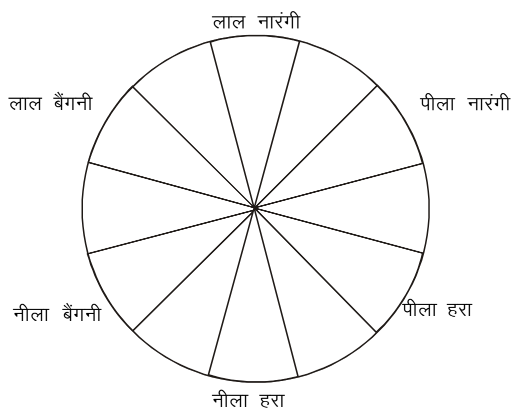

चित्र 28.6 : तृतीयक रंग

रंग योजना

सम्बन्धित रंग योजना	विपरीत रंग योजना
(Related colour scheme)	(Contrast colour scheme)
(अ) एक रंगीय योजना	(अ) विपरीत रंग योजना
(Mono chromatic colour scheme)	(Complementary colour scheme)
(ब) समीपवर्ती रंग योजना	(ब) खंडित रंग योजना
(Analogous colour scheme)	(Split complementary colour scheme)

इनके अलावा त्रिकोणीय रंग योजना (Triad colour scheme) एवं चतुष्कोणीय रंग योजना (Tetrad colour scheme) भी प्रयोग में लायी जाती है।

1. **एक रंगीय योजना :** इस प्रकार की योजना में गृह सज्जा के लिये सिर्फ एक ही रंग का प्रयोग किया जाता है। परन्तु उस रंग के मूल्य अर्थात हल्केपन या गहरेपन में क्रमशः सफेद या काले रंग को विभिन्न अनुपात में मिलाकर परिवर्तन किया जाता है। इसी प्रकार तीव्रता में भी अन्तर लाया जा सकता है। जैसे : हरा, हल्का हरा, गहरा हरा, चमकीला हरा और धुंधला हरा।
2. **समीपवर्ती रंग योजना :** इस योजना में गृह सज्जा के लिये किसी एक रंग व उसके आसपास के दो रंगों (प्रांग रंग चक्र के आधार पर) का प्रयोग किया जाता है। जैसे यदि पीला रंग मुख्य रंग माना है तो उसके साथ पीला हरा और पीला नारंगी प्रयोग किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर इन तीन रंगों को पाँच समीपवर्ती रंगों तक भी ले जाया जा सकता है।
3. **विपरीत रंग योजना :** वे रंग जो कि रंग चक्र में एक दूसरे के एकदम विपरीत हों जब प्रयोग में लाये जाते हैं तो इसे विपरीत रंग योजना कहते हैं। जैसे लाल–हरा तथा नीला–नारंगी। यदि दो विपरीत रंग योजना का प्रयोग किया जाए तो उसे द्विविपरीत रंग योजना भी कहते हैं जैसे : लाल–हरा– नीला–नारंगी।
4. **खण्डित विपरीत रंग योजना :** यह रंग योजना किसी एक रंग के ठीक विपरीत वाले रंग को न चुन कर उसके आस पास वाले रंग चुनने पर प्राप्त की जाती है। जैसे : पीला रंग–लाल बैंगनी–नीला बैंगनी।
5. **त्रिकोणीय रंग योजना :** किन्हीं तीन रंगों का चुनाव जो रंग चक्र में बराबर दूरी पर हों करने पर उसे त्रिकोणीय रंग योजना कहते हैं। जैसे तीनों प्राथमिक रंग–लाल, नीला, पीला; द्वितीय रंग–नारंगी, बैंगनी, हरा।
6. **चतुष्कोणीय रंग योजना :** रंग चक्र पर वे चार रंग जो बराबर दूरी पर हों का चुनाव चतुष्कोणीय रंग योजना कहलाती है। जैसे पीला–नारंगी, हरा, नीला–बैंगनी व लाल या पीला–हरा, नीला, लाल–बैंगनी व नारंगी।

उपरोक्त सभी रंग योजनाओं को चित्र 28.7 में दर्शाया गया है। गृह सज्जा में इन सभी रंग योजनाओं के साथ उदासीन रंगों (Neutral Colours) का भी उपयुक्त स्थान पर समावेश किया जा सकता है।

गृह सज्जा में रंगों के **मानसिक प्रभाव के आधार पर इन्हें निम्न भागों में वृगीकृत किया जा सकता है :**

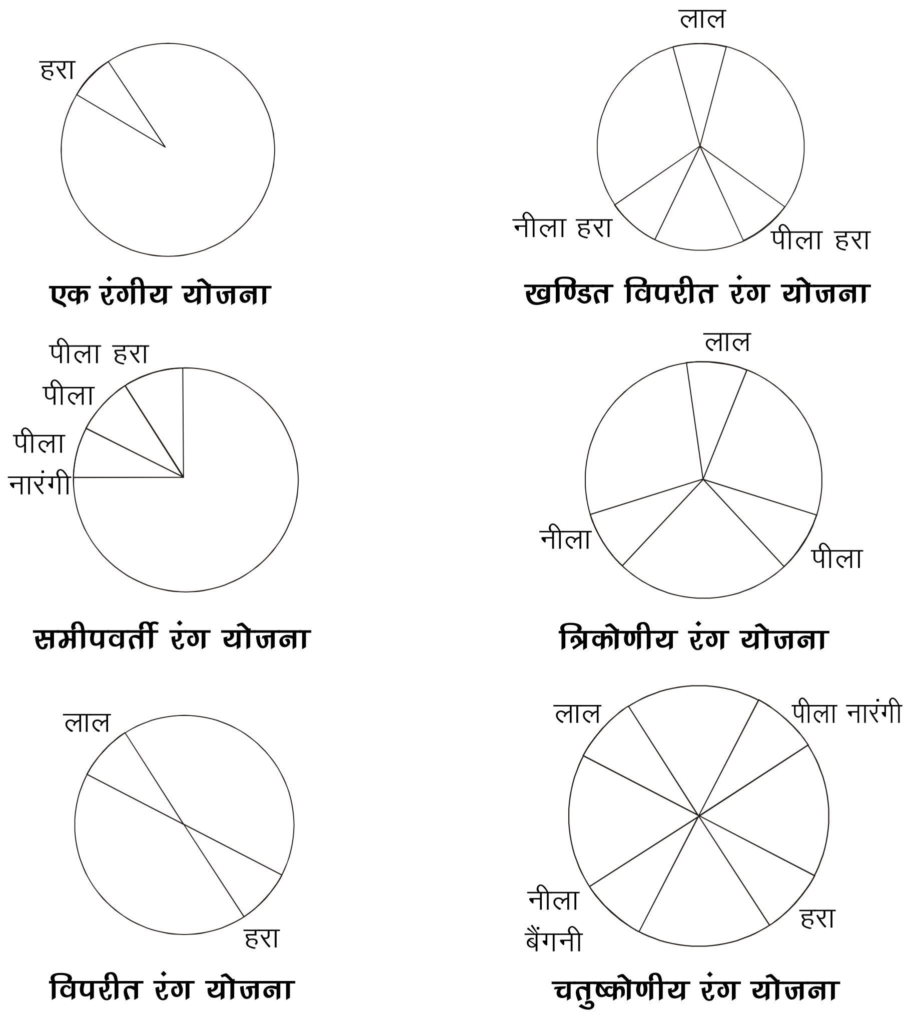

चित्र 28.7 विभिन्न रंग योजनाएँ

1. ऊष्ण एवं शीतल रंग (Hot and cool colours)
2. भारी एवं हल्के रंग (Heavy and light colours)
3. आगे बढ़ने तथा पीछे हटने वाले रंग (Advancing & receding colours)

1. **उष्ण एवं शीतल रंग :** इन रंगों का विभाजन प्रकृति से सम्बन्ध के आधार पर है। लाल, पीला और नारंगी रंग उष्ण रंग कहलाते हैं क्योंकि ये रंग अग्नि एवं सूर्य के हैं। नीला रंग आकाश, हरा रंग वनस्पति का है तथा ये हमें शीतलता का आभास देते हैं।

2. **भारी एवं हल्के रंग :** गहरे रंग भारी होने का आभास देते हैं। जैसे काला, भूरा व लाल रंग अधिक भार का आभास देते हैं जबकि नीला, गुलाबी व सफेद रंग कम भार का आभास देते हैं। अतः भारी रंग जमीन की ओर तथा हल्के रंग ऊपर की तरफ प्रयोग करने चाहिये।

3. **आगे बढ़ने वाले तथा पीछे हटने वाले रंग** : वे रंग जो धरातल पर अधिक होने का प्रभाव छोड़ते हैं तथा एकदम उभर कर आते हैं उन्हें आगे बढ़ने वाले एवं वे रंग जो पृष्ठभूमि में दूरी का आभास कराते हैं उन्हें पीछे हटने वाले रंग कहते हैं। सामान्यतः ऊष्ण रंग आगे बढ़ने तथा शीतल रंग पीछे हटने वाले रंग होते हैं।

रंगों का उपयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें:

1. रंगों का उपयोग करते समय व्यक्ति एवं परिवार को अपनी रुचि का पूरा ध्यान रखना चाहिये। जिस रंग में ज्यादा आनन्द प्राप्त हो वही रंग प्रयोग में लें। किसी को कमरे में बहुरंगीय योजना पसन्द आती है तो किसी को एकदम सादी सफेद सज्जा।
2. रंग चुनते वक्त हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि इस रंग को हम कितनी मात्रा में प्रयोग में लेंगे। जैसे चटकीला बैंगनी रंग सज्जा में थोड़े स्थान पर प्रयोग में लाने पर सुन्दर लग सकता है लेकिन इस रंग से चारों दीवारें नहीं पोती जा सकतीं। नीला रंग अधिक मात्रा में प्रयोग में लाने से आकर्षक लगेगा जबकि लाल रंग अधिक मात्रा में हमें थकाने वाला होगा।
3. गृह सज्जा में कमरे के उद्देश्य को ध्यान में रखकर रंग योजना बनानी चाहिये। जैसे शयनकक्ष आराम करने का स्थान है अतः यहाँ शान्त रंग से सज्जा करें तथा बच्चों को चमकीले व गहरे रंग लुभाते हैं तो उनके कमरे में बहुरंगीय योजना का सुन्दर सम्मिश्रण कर सजायें।
4. किसी भी कमरे की स्थिति एवं आकार को ध्यान में रखकर रंग योजना का चयन करें। जैसे छोटे कमरे में हल्के रंग के प्रयोग से उसका आकार बढ़ जाएगा व गहरे रंग से सिमट जाएगा। रंग का प्रयोग किसी कक्ष को दोषपूर्ण भी बना सकता है और कक्ष के दोषों को छुपा भी सकता है।
5. ठण्डे प्रदेशों एवं मौसम में उष्ण रंग प्रयोग में लाये जा सकते हैं किन्तु गर्मी में ये ही रंग कष्टप्रद हो जाते हैं। गर्म मौसम में शीतल रंग अच्छे लगते हैं।
6. जिस कमरे में प्रकाश का बाहुल्य हो, चाहे वह प्राकृतिक हो या कृत्रिम; हल्के व शीतल रंगों का प्रयोग आकर्षक व मन को शान्ति प्रदान करेगा। उष्ण रंगों का प्रयोग असुविधा और तनाव पैदा कर सकता है।
7. एक ही रंग विभिन्न सतह पर अलग–अलग प्रभाव छोड़ते हैं जैसे : लाल, पीला और नारंगी रंग साटिन, शनील और रेशम पर जितने चटकीले लगेंगे उतने ही खद्दर, जूट, सूती कपड़े पर धुँधले दिखाई पड़ेंगे।
8. हल्के रंग गन्दे जल्दी होंगे तथा गहरे रंग गन्दगी को एकदम दर्शायेगे।
9. जब विपरीत रंगों का प्रयोग किया जाता है तो वे एक दूसरे को एकदम दर्शाते हैं। जैसे : काला और सफेद में काला अत्यधिक काला लगेगा और सफेद अत्यधिक सफेद। जबकि काले के साथ किसी अन्य रंग के उपयोग पर काला उतना काला नहीं लगेगा।
10. रंगों का उपयोग फैशन के आधार पर भी किया जा सकता है। जैसे : पहले बाथरूम में वॉशबेसिन, टब, टाईल्स आदि सफेद लगाई जाती थीं लेकिन अब ये सब विभिन्न रंगों में मिलने लगी हैं। कभी लाल रंग फैशन में आता है तो कभी उदासीन रंग (कबूतरी, काला)। फैशन गृह सज्जा में परिवर्तन व भिन्नता लाने का माध्यम है।

सजावटी वस्तुएँ

गृह सज्जा में सजावटी वस्तुओं से तात्पर्य है– वे सभी छोटी बड़ी वस्तुएँ जो स्वयं सुन्दर हैं तथा

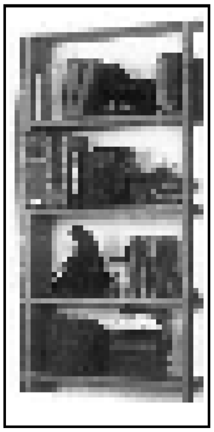

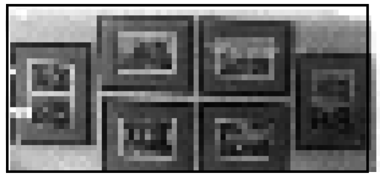

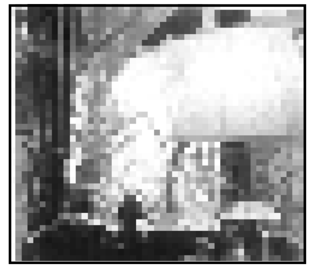

गृह सज्जा में उपयोगी
विभिन्न सजावटी
वस्तुऐं

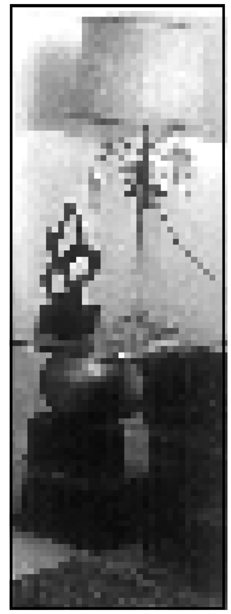

चित्र 28.8

जिनके प्रयोग से गृह सज्जा में वृद्धि होती है। ये वस्तुएँ आन्तरिक सज्जा को परिपूर्णता एवं व्यवहारिकता प्रदान करती हैं तथा साथ ही साथ उनकी कलात्मक अभिवृद्धि भी करती हैं। जैसे मूर्तियाँ, लैम्प, तस्वीरें, घड़ियाँ, पौधे इत्यादि (चित्र 28.8)। सजावटी वस्तुओं का गृह सज्जा में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। कमरे के उद्देश्य एवं स्थान व्यवस्था के अनुरूप इनका प्रयोग करने से गृह सज्जा आकर्षक लगती है। सजावटी वस्तुओं को निम्नलिखित रूप से विभाजित किया जा सकता है :

1. **कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक वस्तुएँ** : ये वे वस्तुएँ हैं जिनका मुख्य उद्देश्य सौन्दर्य में वृद्धि करना है। इसके अन्तर्गत केवल कलापूर्ण कृतियाँ जैसे : चित्र, मूर्तियाँ, पुष्प सज्जा, दर्पण इत्यादि आते हैं।
2. **कार्यात्मक एवं उपयोगी वस्तुएँ** : ये वस्तुएँ सौन्दर्य वृद्धि के साथ–साथ कार्यात्मकता की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण होती हैं। जैसे : लैम्प, दीवार घड़ी, फूल–दान, एश ट्रे इत्यादि।
3. **प्राकृतिक वस्तुएँ :** ये वस्तुएँ प्रकृति में पाई जाती हैं। इन्हें गृहसज्जा में यथावत् ही प्रयोग में लाया जाता है या इनका प्रतिरूप तैयार करके उपयोग में लिया जाता है। जैसे प्रकृति में झरना सुन्दरता का द्योतक है उसका प्रतिरूप फव्वारा कमरे में सजावट के लिये रखा जा सकता है। पेड़, पौधे, एक्वेरियम (Aquarium), शंख, फव्वारे, पंख इत्यादि प्राकृतिक वस्तुएँ गृहसज्जा के लिये उपयोग में लाई जाती हैं।

सजावटी वस्तुएँ खरीदते समय ध्यान रखने योग्य बातें :

1. परिवार एवं परिवार के सदस्यों की रुचि के अनुरूप हों।
2. घर की सामान्य सज्जा के अनुरूप हों।
3. जिस उद्देश्य से ली गई है उसे पूरा करे।
4. अच्छी डिजाइनों के सिद्धान्तों से युक्त हो।
5. जिनके प्रयोग से सौन्दर्य का बोध हो।
6. जिनका प्रयोग एवं रख रखाव आसान हो।

सजावटी वस्तुओं का गृह सज्जा में प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बिन्दु :

1. उपयुक्त स्थान का चयन करें जैसे :
   - दीवार घड़ी को दीवार पर सही जगह व सीधा लगायें।
   - एक युद्ध के चित्र की तस्वीर को शयन कक्ष में न लगायें।
2. बहुत अधिक संख्या में सजावटी वस्तुओं का उपयोग सज्जा में एकता के भाव को नष्ट करता है साथ ही भीड़ का आभास देता है। इन वस्तुओं का समूहीकरण भी किया जा सकता है। जैसे एक ताक में सभी फोटोफ्रेम रखी जा सकती हैं तो दूसरी में मूर्तियाँ एवं तीसरी में जानवर इत्यादि।
3. कार्यात्मक वर्ग की वस्तुएँ प्रयोग करते समय यह ध्यान रखें कि वे पूर्ण रुप से उपयोगी हों जैसे घड़ी बन्द न पड़ी हो, लैम्प सही प्रकार से रोशनी दे, ऐश ट्रे गहरी एवं बड़ी हो आदि।
4. आवश्यकता पड़ने पर आप इनके स्थान में बदलाव ला सकें, फैशन के अनुरूप बदल सकें तथा इन्हें आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना सकें।
5. वस्तुओं का उपयोग करते समय सजावट की शैली का ध्यान रखें। परम्परागत शैली में कुछ विशिष्ट वस्तुओं का प्रयोग जैसे लोककला की वस्तुएँ व ऐतिहासिक वस्तुएँ प्रयोग में लायी जा सकती हैं तथा आधुनिक शैली में नयापन दर्शाने वाली वस्तुएँ जो आजकल प्रचलित हैं का प्रयोग आकर्षक प्रभाव छोड़ते हैं।
6. वस्तुओं का एक बार ढंग से उपयोग ही सब कुछ नहीं है। इन सभी की समय समय पर देखभाल

भी अत्यन्त आवश्यक है।

गृह व्यवस्था में परिवार के सदस्यों का योगदान

परिवार मानव समाज का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण समूह है जिसमें स्त्री, पुरुष व बच्चे रहते हैं। परिवार अपने सदस्यों की आर्थिक, शारीरिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। बच्चों के पूर्ण विकास हेतु उनका लालन–पालन, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं समाजीकरण का कार्य करता है।

मनुष्य अपने परिवार को सुचारू रुप से चलाने हेतु कई कार्य करता है। सुबह से शाम तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिन्दगी में विभिन्न क्रियाएँ कर अपने उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इन सभी क्रियाओं में समय एवं शक्ति का व्यय होता है। कार्य करने के पश्चात जब उद्देश्य पूरा हो जाता है तो व्यक्ति को खुशी एवं संतोष प्राप्त होता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करता है इन क्रियाओं को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं :–

कार्य निहित क्रियाएँ (Work Oriented)	आराम या विश्राम निहित क्रियाएँ (Rest Oriented)	मनोरंजन निहित क्रियाएँ (Leisure Oriented)
खाना बनाना	सोना	टी.वी. देखना
सफाई करना	पढ़ना	सिनेमा देखना
कपड़े धोना	बातें करना	नृत्य करना
बिस्तर लगाना	आराम करना	खेलना
इस्त्री करना		गाने सुनना
व्यवसाय से	कढ़ाई करना	बागवानी
सम्बन्धित	बुनाई करना	मिलना जुलना
कार्य	चित्रकला	नाटक देखना

ये सभी क्रियाएँ, कई छोटी छोटी क्रियाओं से मिलकर पूरी होती हैं। जैसे खाना बनाने के लिये सब्जी धोना, काटना, मसाला तैयार करना, पकाना, आटा लगाना तथा चपाती सेंकना, उसके बाद गरम–गरम परोसना। ये सभी क्रियाएँ एक क्रमबद्ध तरीके से करनी चाहिये तथा प्रत्येक कार्य की महत्ता को समझ कर पूरी क्रिया को व्यवस्थित करने से ही समय व शक्ति बचेगी तथा काम में गुणवत्ता आएगी।

घर को सुचारु रुप से चलाने में परिवार के सभी सदस्यों की एक अहम् भूमिका होती है। परिवार के सदस्यों द्वारा परिवार के साधनों का सदुपयोग कर पारिवारिक लक्ष्यों की पूर्ति की जाती है। परिवार के एवं प्रत्येक सदस्य के लक्ष्यों का निर्धारण करना, उनके लिये कार्य करना तथा उद्देश्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना ही गृहिणी एवं परिवार के सभी सदस्यों का कर्त्तव्य है। प्रत्येक सदस्य घर में कुछ न कुछ कार्य अवश्य करता है और वह उसकी जिम्मेदारी बन जाती है। माँ का काम है परिवार के लिये पौष्टिक भोजन बनाना, बर्तन व कपड़े धोना, घर की सफाई करना तथा सभी सदस्यों की देखभाल करना। पिता का काम है बाजार से सामान लाना, बिलों का भुगतान करना, वस्तुओं को ठीक कराना आदि। बच्चे भी अपनी योग्यता एवं रुचि अनुसार विभिन्न कार्य कर सकते हैं तथा माता–पिता के साथ कार्य में हाथ बँटा सकते हैं।

वर्तमान समय में स्त्रियाँ भी घर से बाहर जाकर जीवकोपार्जन करती हैं और घर का कार्य भी करती हैं ऐसी स्थिति में घर के प्रत्येक सदस्य को विभिन्न कार्यों में गृहिणी का हाथ बँटाना चाहिये साथ ही

अपने कार्यों को उत्तरदायित्व समझ कर पूर्ण करना चाहिये। इससे परिवार का वातावरण सुखमय और संतोष जनक बना रहेगा तथा जीवन की गुणवत्ता अच्छी बनी रहेगी। प्रत्येक सदस्य के गृह क्रियाओं में योगदान को सराहना चाहिये।

परिवार में सभी उम्र, लिंग व योग्यता वाले सदस्य रहते हैं। सदस्यों की योग्यता व स्थिति के अनुसार कार्य का विभाजन किया जाना चाहिये। श्रम का विभाजन इस प्रकार करना चाहिये कि किसी एक सदस्य पर अत्यधिक कार्यभार न हो। बच्चे जैसे–जैसे बड़े होते जाएँ उन्हें अधिक जिम्मेदारी वाले कार्य सौंपने चाहिये। उदाहरण के लिये एक परिवार के सदस्यों में श्रम विभाजन तालिका 28.3 के अनुसार किया जा सकता है। घर में नौकर होने पर, महिला के काम काजी होने पर या रिश्तेदार के साथ रहने पर किये गये श्रम विभाजन में अनुकूल परिवर्तन आवश्यक हैं।

तालिका 28.3 : परिवार के सदस्यों में श्रम विभाजन

क्र.सं.	माता	पिता	लड़का	लड़की
1.	खाना बनाना (मुख्य कार्य)	बाजार से भोजन सम्बन्धित वस्तुएँ लाना	मेज पर प्लेटें लगाना व सजाना	माँ को खाना बनाने में सहायता करना, सब्जी काटना चपाती सेंकना
2.	कपड़े धोना (मुख्य कार्य)	कपड़े प्रेस के लिये देना या प्रेस करना	प्रेस से कपड़े लाना या प्रेस करना तथा ठीक जगह पर रखना	कपड़े सुखाना कपड़ों की सिलाई या बटन लगाना
3.	घर की सफाई (मुख्य कार्य)	वस्तुओं को ठीक जगह पर रखना या कभी–कभी बिस्तर साफ करना, बगीचा साफ कर देना।	फर्नीचर से मिट्टी झाड़ देना, कीटनाशक दवाई छिड़क देना।	झाडू लगाना, पौंछा लगाना, वाश बेसिन साफ करना
4.	कपड़े सिलना	बैंक में पैसे जमा कराना, जीवन बीमा कराना, खराब वस्तुओं को ठीक कराना।	कार साफ करना बगीचे में पानी देना।	घर की सजावट करना, पुष्प सज्जा करना
5.	वस्तुओं की देखभाल कर उनका भण्डारण करना	मेहमानों की आवभगत करना	मेहमानों के साथ बातचीत करना, उन्हें घुमाने ले जाना। पिक्चर की टिकिट लाना।	मेहमानों को पानी पिलाना। उनके लिए चाय, कॉफी बनाना

इन सभी कार्यों के अलावा भी घर में कई कार्य होते हैं जिन्हें परिवार के सदस्य मिलजुल कर पूरा करते हैं। मन लगाकर किये गये काम की गुणवत्ता अधिक होती है और काम शीघ्रता से सम्पन्न हो जाता है। प्रत्येक सदस्य को इस प्रकार विश्राम और मनोरंजन के लिए भी भरपूर समय मिल जाता है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवासीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक घर का निर्माण करता है। यह वह स्थान है जो परिवार के सर्वांगीण विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
2. प्रतिदिन व्यक्ति अपने घर में विभिन्न क्रियाएँ जैसे सोना, बैठना, खाना, इत्यादि पूर्ण करता है जिसके लिये उसे उपयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है।
3. घर की सुव्यवस्थित योजना बना कर विभिन्न क्रियाओं के लिये स्थान की व्यवस्था की जाती है ताकि सदस्यों का कार्य असानी से सम्पन्न हो सके।
4. गृह सज्जा द्वारा घर को सुन्दर, सुविधापूर्ण एवं आकर्षक बनाया जाता है साथ ही गृहिणी गृह सज्जा द्वारा अपनी विभिन्न अभिव्यक्तियों को रूप दे सकती है।
5. सज्जा में काम में आने वाले कला के विभिन्न तत्व रेखा, आकार, बनावट, रंग, प्रकाश एवं स्थान हैं। इनमें रंग एक महत्त्वपूर्ण तत्व है जिसके द्वारा घर को आकर्षक बनाया जा सकता है।
6. रंगों के कई गुण होते हैं जिनके द्वारा हम एक ही रंग को हल्का एवं गहरा, चमकीला एवं धुंधला कर के रंगों में भिन्नता विकसित कर सकते हैं।
7. गृह सज्जा में विभिन्न रंगों का उपयोग उनकी रंग योजना के आधार पर किया जाता है जिससे उनका एक सौन्दर्यात्मक प्रभाव घर के वातावरण एवं पारिवारिक सदस्यों के मानस पटल पर पड़ता है।
8. गृह सज्जा में कई सजावटी वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है जैसे मूर्तियाँ, तस्वीरें, लैम्प, घड़ियाँ, पुष्प सज्जा, दर्पण, आदि।
9. सजावटी वस्तुएँ कलात्मक, कार्यात्मक तथा प्राकृतिक हो सकती हैं। व्यक्ति इन्हें अपनी अभिरुचि, आर्थिक स्थिति एवं उपलब्धता के आधार पर उपयोग में ला सकता है।
10. सभी गृह क्रियाएँ कई छोटी–छोटी क्रियाओं से मिलकर पूरी होती हैं। अतः उनका व्यवस्थापन अत्यन्त आवश्यक है। परिवार के सभी सदस्यों को विभिन्न गृह क्रियाओं में अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुसार कार्य करना चाहिये।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) उत्तम मकान से हमारा तात्पर्य है :–

(अ) सुखमय एवं शान्तिमय निवास (ब) भव्य खूबसूरत मकान
(स) छत व चारदीवारी वाला मकान (द) उचित वातावरण वाला मकान

(ii) रसोई घर, भण्डार, चौक, बरामदा आदि किस क्षेत्र में आते हैं :–

(अ) रसोई क्षेत्र (ब) उपयोगी क्षेत्र
(स) कार्य क्षेत्र (द) एकान्त क्षेत्र

(iii) एक श्रृंगार कक्ष प्रायः निम्न कक्ष के पास होना चाहिये :–

(अ) अतिथि कक्ष (ब) भोजन कक्ष
(स) अध्ययन कक्ष (द) शयन कक्ष

(iv) एक अतिथि कक्ष का औसतन माप होना चाहिये :–

(अ) 6' X 7' (ब) 7' X 10' (स) 12' X 15' (द) 25' X 25'

(v) रंग के नाम को कहा जाता है :–

(अ) रंग (ब) ह्यू (स) प्राथमिक रंग (द) मूल्य

(vi) लाल, नीला एवं पीला रंग हैं :–

(अ) प्राथमिक (ब) द्वितीय (स) तृतीय (द) विपरीत

(vii) उदासीन रंग होता है :–

(अ) सफेद (ब) काला (स) कबूतरी (द) उपरोक्त सभी

(viii) प्रकाश बाहुल्य कमरे में निम्न रंग काम में लेने चाहिये :–

(अ) उष्ण (ब) शीतल (स) प्राथमिक (द) उदासीन

(ix) यह एक पूर्ण रूपेण कलात्मक सजावटी वस्तु है :–

(अ) घड़ी (ब) फव्वारा (स) लैम्प (द) तस्वीर

(x) गृह क्रियाओं का विभाजन निम्न के आधार पर करना चाहिये :–

(अ) उम्र (ब) लिंग (स) योग्यता (द) उपरोक्त सभी

2. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :

(i) गृह कार्य में श्रम विभाजन (ii) स्थान व्यवस्थापन के नियम
(iii) रंगों का जीवन में महत्त्व (iv) गृह सज्जा हेतु कार्यात्मक वस्तुएँ
(v) सजावटी वस्तुओं का रख रखाव।

1. गृह क्रियाओं को करने में स्थान व्यवस्था की महत्ता को समझाइये।
2. विभिन्न कक्षों के औसतन माप से आप क्या समझते हैं?
3. स्थान व्यवस्था करते समय आप किन–किन बातों को ध्यान में रेखेंगे?
4. गृह सज्जा क्यों आवश्यक है?
5. गृह सज्जा में रंगों का उपयोग किस प्रकार करना चाहिये?
6. विभिन्न रंग योजनाओं को उदाहरण सहित समझाइये?
7. सजावटी वस्तुएँ एवं उनका प्रयोग गृहिणी की कलात्मक रूचि को दर्शाता है। समझाइये।
8. गृह क्रियाओं को सुचारू रूप से चलाने में परिवार के सदस्यों की भूमिका पर प्रकाश डालिये।

उत्तरमाला :

(i) अ (ii) स (iii) द (iv) स (v) ब (vi) अ (vii) द (viii) ब (ix) द (x) द

प्रायोगिक

1. कार्य स्थल का मूल्यांकन (Evaluation of Work Place)

आपने अध्याय में घर में होने वाली विभिन्न क्रियाओं तथा उनके लिये उचित स्थान निर्धारण के विषय में पढ़ा। अपने घर की रसोई या अन्य कक्ष में होने वाली विभिन्न क्रियाओं की सूची बनाएँ तथा उनके लिये निर्धारित स्थान की उपयुक्तता निम्न बिन्दुओं के आधार पर करें :–

1. स्थान का माप
2. सुविधाजनक
3. हवा व रोशनी की उपलब्धता
4. पारस्परिक सम्बन्ध
5. उसमें रखे गये सामान, फर्नीचर, उपकरण की व्यवस्था आदि।

2. पुष्प सज्जा (Flower Decoration)

पुष्प विन्यास एक कला है। फूलों का सौन्दर्य स्वाभाविक होता है तथा मन को प्रसन्न करता है। इसका प्रमुख उद्देश्य वातावरण की सजीवता एवं सुन्दरता में वृद्धि करना है। फूलों, पत्तियों व टहनियों को फूलदानों में उनकी बनावट व रंग के आधार पर विशेष स्थान पर सजाने की कला को पुष्प सज्जा कहते हैं।

पुष्प सज्जा के लिये हमें फूल व पत्ते, फूल व पत्तों को खड़ा रखने के लिये टहनी साधन (Stem Holder), फूल दान, चाकू या कैंची आदि की आवश्यकता होती है।

प्राकृति में विभिन्न बनावट, रंग, आकार के फूल व पत्ते पाये जाते हैं। इन फूलों का अपना एक सौन्दर्य होता है। व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार पुष्प सज्जा में इनका उपयोग कर सकता है। जैसे किसी को गुलाब के फूल तो किसी को लिलि के तो किसी को सूरजमुखी के फूल पसन्द होते हैं। इसी प्रकार तरह तरह के पत्तों का उपयोग भी सजावट में किया जाता है।

फूल व पत्तों को खड़ा रखने के लिये बाजार में कई प्रकार के टहनी साधन उपलब्ध होते हैं। ये आम तौर पर लोहे के बने होते हैं तथा इनमें नुकीली कीलों जैसी संरचना पायी जाती है ताकि टहनी इनमें आसानी से लगाई जा सके। इसके स्थान पर स्पंज तथा लोहे की जाली का उपयोग भी किया जा सकता है। फूल दान में गीली मिट्टी, कंकर, पत्थर आदि डालकर भी फूलों को खड़ा किया जा सकता है।

विभिन्न आकार, प्रकार और धातुओं के फूलदान में फूलों को सजाया जाता है। ये मिट्टी, चीनी मिट्टी, काँच,लकड़ी, धातु अथवा प्लास्टिक के बने होते हैं। कुछ फूलदान नीची, मध्यम और लम्बी आकृति वाले तो कुछ ऊँचे, बड़े और संकरी आकृति वाले होते हैं। कई फूलदान तश्तरी के समान चौड़े, गोल, अण्डाकार या आयताकार हो सकते हैं। फूलदान पर्याप्त रूप से गहरे होने चाहिये ताकि उनमें आसानी से जल भरा जा सके। फूलदान का चुनाव फूलों की लम्बाई, कमरे में रखने के स्थान तथा पुष्प सज्जा के आकार पर निर्भर करता है जैसे एक खाने की मेज पर छोटा तथा चौड़ा फूलदान उपयुक्त रहता है तथा कमरे के कोने के लिये लम्बा व संकरा फूलदान उचित होगा। पुष्प सज्जा करते समय निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें :

1. पुष्प सदैव ताज़े, सुन्दर एवं गंधरहित हों साथ ही कीटों को आकर्षित न करें।
2. पुष्पों को हमेशा सायंकाल में तोड़ कर ताजा पानी में कुछ घण्टे रहने दें।

3. सज्जा अवसर के अनुकूल हो जैसे औपचारिक अवसरों पर शानदार फूलों की बड़ी सममितीय सज्जा उपयुक्त होती है। अपने मित्रों से मिलने पर सुन्दर पुष्पों के छोटे गुलदस्ते पर्याप्त होते हैं।
4. पुष्प सज्जा कमरे के अनुकूल हो। अतिथि कक्ष में औपचारिक सज्जा करनी चाहिये तथा शयन कक्ष में अनौपचारिक सज्जा का उपयोग किया जा सकता है। औपचारिक सज्जा हेतु विशिष्ट फूल जैसे गुलाब तथा अनौपचारिक सज्जा हेतु गेंदा, डहलिया आदि फूलों का उपयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार फूलदान भी मिट्टी से लेकर चाँदी के पदार्थों के उपयोग में लिये जा सकते हैं।
5. पुष्प सज्जा कमरे में किस स्थान पर रखनी है जैसे बड़े गुलदस्ते एवं पुष्प विन्यास कोने में तथा कम ऊँचा व फैला हुआ पुष्प विन्यास कमरे के बीच में मेज पर अच्छा लगेगा। बड़ी मेज पर छोटे एवं छोटी मेज पर बड़ी पुष्प सज्जा अच्छी नहीं लगेगी।
6. फूलों का चयन करते समय फूलों का रंग, कमरे में उपयोग किये गये रंगों को ध्यान में रखकर करना चाहिये।
7. फूलों का आपसी संयोजन भी महत्त्वपूर्ण है। उदाहरण के लिये गुलाब के फूलों के साथ गेंदे के फूल अच्छे नहीं लगेंगे। फूल व फूलदान में भी समायोजन होना चाहिये।

अध्यापक के मार्गदर्शन में फूलों व पत्तों तथा फूलदान की उपलब्धता के आधार पर विभिन्न अवसर, कमरे तथा स्थान के लिये पुष्प सज्जा करें। ताज़े फूल व पत्ती न उपलब्ध हों तो सूखे हुए फूल व पत्तियाँ या कृत्रिम फूलों से भी सजावट की जा सकती है।

आस पड़ौस में, बगीचे में या पुष्प प्रदर्शनी द्वारा भी बालकों को पुष्प सज्जा का ज्ञान दिया जा सकता है।

- उपरोक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर उपलब्ध पुष्प एवं पत्तों द्वारा पुष्प सज्जा करें।

3. फर्श की सजावट (Floor Decoration)

भारत में तीज त्योहारों व पावन अवसरों पर फर्श सजावट एक प्राचीन परम्परा है। हमारे देश के विभिन्न भागों में विभिन्न कला शैली द्वारा फर्श सजाया जाता है। रंगोली तथा अल्पना मुख्य रूप से सजावट के लिये उपयोग में ली जाती हैं।

1. **रंगोली** : यह प्रायः दीपावली, होली, शादी एवं पावन अवसरों पर बनाई जाती है। कई प्रदेशों में इसे प्रतिदिन घर के सामने सजाया जाता है। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है विभिन्न रंगों का समायोजन एक विशिष्ट डिज़ाइन में करने को रंगोली कहते हैं। परम्परागत रंगोली सजाने में चावल का पेस्ट या पाउडर इस्तेमाल किया जाता है जिसमें पीला, नीला, लाल व हरा रंग मिला दिया जाता है। आजकल रंगोली बनाने के लिये गुलाल, पोस्टर कलर, तेलीय रंग (Oil paints) एवं रंगोली के विशिष्ट रंग जो फैलाने में अत्यन्त आसान होते हैं का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा फूलों की पत्तियों, लकड़ी के बुरादे (विभिन्न रंग में रंगकर) तथा अनाज व दालों की सहायता से भी रंगोली बनाई जा सकती है। आधुनिक रंगोली में जलती हुई मोमबत्ती एवं दीपक का भी प्रयोग किया जाता है।

रंगोली बनाने के लिये सर्वप्रथम चॉक से फर्श पर डिज़ाइन बना लें। किसी एक पदार्थ का चुनाव कर, रंग योजना चुनकर डिज़ाईन में रंग बुरकायें ताकि रंग एक समान भर जाये और फर्श नजर न आये।

अल्पना (मांडणा) : मांडणों की लोक कला भी अति प्राचीन है। इसे विशेषकर धार्मिक जीवन की पृष्ठभूमि

से जोड़ा गया है अतः इसे पूजा के स्थान पर बनाया जाता है। लिपे–पुते, अधसूखे आँगन पर गेरू व खड़िया से भांति–भांति के जो चितराम बनाये जाते हैं उन्हें मांडणे कहते हैं। इनकी भी विशिष्ट डिज़ाइनें होती है। इनको बनाने के लिये गेरू मिट्टी एवं खड़िया को पहले पानी में भिगो दिया जाता है। स्थान को साफ कर पहले गेरू से पोत लिया जाता है। सूखने के पश्चात खड़िया से चित्र बनाये जाते हैं। यह मांडणा सूखने के पश्चात् दिखने में अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है।

- उपरोक्त जानकारी के आधार पर रंगोली एवं मांडणा बनाकर फर्श की सजावट करें।

पुष्प सज्जा

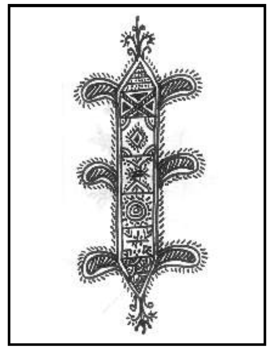

अल्पना

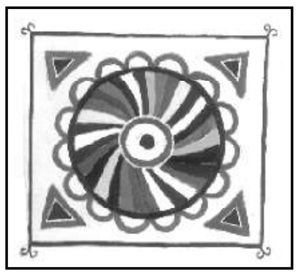

रंगोली

4. दैनिक कार्य में श्रम विभाजन (Distribution of Labour in Day-to-Day Work):

आप अपने दैनिक जीवन में से किसी एक दिन की कार्य योजना बनायें। योजना बनाकर ये बताये की दिनभर के विभिन्न कार्यो में आप किन–किन सदस्यों की मदद लेंगें और क्यों ? इस प्रायोगिक को करने हेतु अध्याय में दी गई तालिका 28.3 की सहायता से परिवार के सदस्यों में श्रम विभाजन का उपयोग करें।

दैनिक कार्यों में परिवार के सदस्यों का श्रम विभाजन कर निम्न सारणी की पुर्ति करें।

कार्य	स्वयं करना	सदस्यों की सहायता लेना				सहायता क्यों लेना चाहती हो
		माता	पिता	भाई	बहिन	

5. विभिन्न पदार्थों से निर्मित वस्तुओं की सफाई एवं पॉलिश
(Cleaning and Polishing of Items Made from Different Materials)

गृह सज्जा में प्रयोग होने वाली वस्तुएँ कितनी ही सुन्दर क्यों न हों, उन्हें उपयुक्त स्थान पर व्यवस्थित भी कर दिया जाए तब भी वे सौन्दर्य में कमी ला सकती हैं, यदि उनकी प्रतिदिन सफाई, देखभाल एवं रख रखाव न किया जाये। वस्तु की महत्ता एवं उपयोगिता उसकी स्वच्छता पर ही निर्भर करती है। लकड़ी का चमकदार फर्नीचर, बेदाग काँच का चमकता हुआ सामान, साफ सुथरा प्लास्टिक एवं धातु की वस्तुएँ तथा लोहे का बिना जंग लगा सामान सदैव सुन्दर व आकर्षक लगेगा।

सजावटी वस्तुओं के गन्दे होने का प्रमुख कारण प्रकृति है। जैसे धूलकण, हवा के साथ इधर उधर उड़ते रहते हैं तथा वस्तुओं पर जा कर जमा हो जाते हैं। वस्तुओं पर मौसम का असर भी पड़ता है। मौसम में आर्द्रता होने पर कई धातुओं पर एक प्रकार की परत चढ़ जाती है तथा कुछ निशान, धब्बे एवं धुंधलापन दिखाई देने लगता है। पीतल, चाँदी, तांबा व एल्युमीनियम पर हरे व काले धब्बे पड़ जाते हैं तथा उनकी चमक फीकी पड़ जाती है। लोहे में जंग लग जाता है। लकड़ी की वस्तुओं पर यदि पॉलिश सही तरीके से न हो तो गर्मियों में सिकुड़ कर मुड़ जाती है या वर्षा के दिनों में फूल जाती है तथा कभी–कभी फंफूंद भी लग जाती है।

प्राकृतिक कारणों के अतिरिक्त वस्तुओं का लगातार उपयोग या असावधानी पूर्ण उपयोग भी उन्हें खराब एवं गन्दा कर देता है अतः वस्तुओं की सफाई, उनका रख रखाव एवं सार–संभाल अत्यन्त आवश्यक है।

वस्तुओं के उपयोग, बनावट, महत्ता, पदार्थ आदि के आधार पर उसकी सफाई एवं रख रखाव निर्भर करता है। जैसे प्रतिदिन काम में आने वाली टेबल, कुर्सी आदि को रोज साफ करना होता है जबकि ताकों में रखी सजावटी वस्तुओं को रोज साफ करने की आवश्यकता नहीं होती है। घर में वस्तुएँ विभिन्न पदार्थों से निर्मित होती हैं जिन्हें विशिष्ट तरीके, साधन द्वारा एवं क्रमबद्ध तरीके से साफ करना चाहिये। ऐसा करने से उनकी सुन्दरता एवं उपयोगिता में वृद्धि होगी साथ ही वे लम्बे समय तक काम में लिये जा सकेंगे। घर में सामान्यतया उपयोग में आने वाले विभिन्न पदार्थों से निर्मित वस्तुओं के रख रखाव के तरीके इस प्रकार हैं:

1. एल्युमीनियम :

सफाई :

- इसे गर्म पानी एवं साबुन के घोल से साफ किया जा सकता है।
- क्षार का एल्युमीनियम पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, यह इसे काला कर देता है अतः इस पर सोड़े का उपयोग न करें।
- यदि एल्युमीनियम की वस्तु पर कालापन आ गया है तो उसे सिरके व नींबू के रस की कुछ बून्दें लगाकर रगड़कर साफ करें।

पॉलिश :

- एल्युमिनियम पर एनोडाइजिंग (एक विशेष प्रकार की फिनिश जो सिर्फ एल्युमीनियम पर की जाती है) द्वारा चमक लाई जा सकती है।
- इस पर पेंट करके भी वस्तुओं को चमकाया जा सकता है।

2. लोहा :

सफाई :

- जंग लगी वस्तुओं को सूखे चूने से साफ करना चाहिये।
- साधारण सफाई हेतु कपड़े की सहायता से झाड़ पौंछ कर साफ किया जा सकता है।

पॉलिश :

- लोहे से निर्मित वस्तुओं पर पिघले मोम (Liquid wax) की परत चढ़ाने से सफाई आसान हो जाती है।
- लोहे को चमकीला बनाने के लिये उस पर कपड़े की मदद से तेल भी लगाया जा सकता है। ऐसा करने से उस पर जंग नहीं लगेगा।
- लोहे पर इच्छानुसार पेंट (तेलीय रंग) भी किया जा सकता है।

3. स्टेनलेस स्टील :

सफाई :

- इस पदार्थ से बनी वस्तुओं को आसानी से साफ किया जा सकता है। बर्तनों को विशिष्ट साबुन के घोल से रगड़ें तथा साफ पानी से धो लें।
- इन पर पानी के दाग को हटाने हेतु एक स्वच्छ कपड़े (पानी सोखने वाले) से रगड़कर पौंछ लें।
- खुरदरे साफ करने की वस्तु से न रगड़ें तथा राख एवं मिट्टी का प्रयोग न करें, इन पर खरोंचों के निशान पड़ सकते हैं।

पॉलिश :

- किसी प्रकार की पॉलिश की आवश्यकता नहीं होती है।

4. पीतल :

सफाई :

- सजावटी वस्तुओं की धूल झाड़ लें।
- साफ करने के लिये गर्म पानी एवं साबुन का उपयोग करें।
- धब्बे साफ करने के लिये नींबू के टुकड़े पर नमक छिड़क कर गंदी सतह को रगड़ें। कुछ देर ऐसे ही सूखने दें। फिर उबलते हुए पानी से धो कर पौंछ लें। नींबू की जगह इमली, सिरका तथा कच्चा आम भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

पॉलिश :

- बाजार में उपलब्ध पॉलिश (ब्रासो) को रुई अथवा पतले कपड़े पर लगाकर रगड़ें। वस्तु एकदम चमकने लगेगी।

5. तांबा :

सफाई :

- वस्तुओं को चूने के पानी से आसानी से साफ किया जा सकता है।
- इसकी बनी वस्तुओं को पीतल की तरह साफ करें।
- कई बार प्राचीन (Antique) वस्तुओं को तो सिर्फ पौंछकर थोड़ा सा तेल कपड़े की सहायता से लगाया जाता है ताकि उसमें प्राचीनता बनी रहे व चमक आ जाये। उन्हें नींबू व नमक से न रगड़ें।

पॉलिश :

- पीतल की तरह इन पर भी पॉलिश की जा सकती है।

6. चाँदी :

सफाई :

- वायु के सम्पर्क में आने से चाँदी की वस्तुओं की रंगत बिगड़ जाती है अतः इसे समय समय पर साफ किया जाना चाहिये।
- साफ कपड़े से पौंछ कर मिट्टी हटायें।
- एक भगोने में एक लीटर पानी लें तथा इसमें एक छोटा चम्मच नमक और एक चम्मच सोड़ा डालकर पानी को उबाल लें। उबलते पानी में चाँदी की वस्तुओं को छोड़ें तथा पानी को उबलते रहने दें। चार पाँच मिनिट में चाँदी की चीजें निखर जाएँगी। तत्पश्चात् इन्हें निकाल कर साफ पानी से धो लें।
- यदि वस्तुओं पर बारीक खुदाई वाला काम किया हुआ हो तो ब्रश की सहायता से रगड़कर साफ कर सकते हैं।
- किसी भी टूथपेस्ट द्वारा भी चाँदी को साफ किया जा सकता है।
- तनु अमोनिया तथा स्प्रिट का प्रयोग भी चाँदी को साफ करने में लाया जा सकता है।

पॉलिश :

- चाँदी को चमकाने हेतु बाजार में सिल्वो पॉलिश उपलब्ध है। उसे मुलायम कपड़े या स्पन्ज या फलालेन के कपड़े पर लगाकर चाँदी की सतह को धीरे–धीरे रगड़ने पर चाँदी एकदम चमकने लगेगी।
- यदि चाँदी को जानबूझ कर काला किया गया है (Oxidised silver) तो पॉलिश न लगायें तथा न ही उसे रगड़ें। ऐसा करने से वह चमक जाएगी।

7. काँच/शीशा :

सफाई :

- साफ पानी से धोकर साफ कपड़े से पौंछ लें।

- साबुन के घोल का उपयोग भी काँच को चमकदार बनाता है।
- शीशे या काँच पर पानी के छींटे डालकर अखबार से रगड़कर साफ कर लें।
- सूखे शीशे को कपड़े या कागज़ के टुकड़ों पर स्प्रिट लगाकर रगड़ने से शीशे चमक जाते हैं।
- साफ पानी में सिरका मिला कर धोने से भी शीशे चमक जाते हैं।
- एक अखबार की गद्दी बनाकर उस पर पैराफिन लगाइए या फिर नील को गीला कर के लगाइये। इसके बाद गद्दी को लम्बाई व चौड़ाई दोनों ओर अच्छी तरह रगड़कर चमकाइये। शीशा बेदाग चमकने लगेगा।
- बाजार में आजकल काँच चमकाने हेतु कई रासायनिक तरल पदार्थ मिलते हैं जिसे लगाकर साफ करने से काँच तथा दर्पण एकदम चमकने लगता है।

पॉलिश :

- काँच पर किसी प्रकार की पॉलिश की आवश्यकता नहीं होती है।

8. प्लास्टिक :

सफाई :

- साधारण सफाई के लिये प्लास्टिक को धो कर मुलायम कपड़े की सहायता से पौंछ लीजिए।
- यदि थोड़ा ज्यादा गन्दा है तो साबुन के घोल से साफ करें। तत्पश्चात् सूखे कपड़े से पौंछ लें। प्लास्टिक ज्यादा गर्म पानी से पिघल सकता है अतः हल्के गर्म पानी में साबुन डाल कर भी गन्दे प्लास्टिक को चमकाया जा सकता है।
- ज्यादा खुरदरे रगड़ने वाले साधनों का प्रयोग न करें। निशान पड़ने का डर रहता है।
- बाजार में उपलब्ध रासायनिक साधनों का उपयोग करके भी इसे साफ कर सकते हैं।
- पानी में खाने का सोड़ा डालकर उसे प्लास्टिक पर थोड़ी देर लगा रहने दें। बाद में रगड़कर साफ कर लें।

पॉलिश :

- किसी प्रकार की पॉलिश की आवश्यकता नहीं होती है।

9. लकड़ी :

सफाई :

- इसकी बनी वस्तुओं को प्रयोग में लाने से पूर्व पॉलिश करना तथा उस पर तेल लगाकर रखना (Oiling) आवश्यक है।
- पॉलिश की हुई लकड़ी पर कोई धब्बा हो तो उसे पानी, सिरका या साबुन के घोल या नमक की सहायता से साफ कर लें।
- यदि रंग का धब्बा हो तो तारपीन का तेल लगाकर साफ करें। यूकेलिप्टस के तेल द्वारा भी अज्ञात धब्बे छुड़ाये जा सकते हैं।

- फर्नीचर को कपड़े से रगड़ते समय इस बात का ध्यान रहे कि कपड़ा उसी दिशा में फिरायें जिस तरफ लकड़ी का ग्रेन हो।
- लकड़ी में दरार पड़ गयी हो तो उसे पुट्टी से भर दें।
- यदि लकड़ी पर खरोंचें पड़ गयी हों तो उस पर मोम रगड़कर भर लें। तत्पश्चात् अलसी और तारपीन के तेल को सतह पर, कपड़े की मदद से लगायें।

पॉलिश :

- सर्वप्रथम फर्नीचर को साफ कपड़े से पौंछे।
- मैल को गर्मपानी व सोड़े की सहायता से छुड़ायें।
- बाज़ार में उपलब्ध वार्निश को ब्रश की सहायता से लगायें।
- ब्रश को दोनों दिशाओं में चलायें ताकि वार्निश पूरी सतह पर अच्छी तरह लग जाये।
- पहली परत सूखने के बाद आवश्यकता हो तो वार्निश की दूसरी परत भी चढ़ायें।
- फर्नीचर पर चमक लाने के लिये उसे कोमल कपड़े से जोर से रगड़ें।
- वार्निश की जगह कमरे की रंग योजना के अनुसार फर्नीचर पर रंग भी किया जा सकता है।

उपरोक्त बताये गये तरीकों से गृहिणी आसानी से विभिन्न पदार्थों से निर्मित वस्तुओं को साफ व चमका कर रख सकती है। जिससे वस्तुओं की सुन्दरता व उपयोगिता बढ़ जाएगी तथा वस्तुएँ लम्बे समय तक चलेंगी।

निम्न वस्तुओं की प्रयोगशाला में सफाई करें तथा प्रायोगिक पुस्तिका में निम्न सारिणी को पूरा करें।

क्र.सं.	वस्तु का नाम	उपस्थित गन्दगी	सफाई हेतु	
			सामग्री	विधि
1.	चाँदी की पायल			
2.	तांबे का बर्तन			
3.	प्लास्टिक की बाल्टी			
4.	स्टील का जग			
5.	अन्य			

उपरोक्त वस्तुओं का साफ करने के पश्चात् अपनी टिप्पणी भी देवें।